78वें स्थापना दिवस पर विशेषः–

राजस्थान विश्वविद्यालय : नई शिक्षा नीति 2020 के साथ 78वें वर्ष में प्रवेश ।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखने वाला राज्य का सबसे बडा एवं ऐतिहासिक उच्च शिक्षण संस्थान राजस्थान विश्वविद्यालय 08 जनवरी 2024 को अपने 78वें स्थापना दिवस में प्रवेश कर रहा है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने अपना एक विशेष प्रभाव स्थापित किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को स्थापित करने में विद्वता एवं समर्पित त्याग की उच्च भावना से परिपूर्ण विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोध छात्रों की विशेष भागीदारी रही है।

भारतीय एवं राज्य स्तर की सभी प्रशासनिक सेवाओं के साथ राजनीति, समाज सेवा, वाणिज्य, विज्ञान, कला एवं संस्कृति, पत्रकारिता जैसे अन्य प्रमुख क्षेत्रों में इस विश्वविद्यालय का प्रमुख योगदान स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसे भी एक सुखद संयोग ही समझा जाना चाहिए की 78वें वर्ष में प्रवेश के साथ इस विश्वविद्यालय का कुलपति के रूप में नेतृत्व प्रथम महिला स्थायी कुलपति के रूप में विश्वविद्यालय की ही एक विद्वान अर्थशास्त्री प्रो. अल्पना कटेजा को मिला है। यहां यह उल्लेख करना भी समिचीन होगा कि वर्तमान में विश्वविद्यालय में नियमित छात्र के रूप में अध्ययन करने वाले छात्रों की कुल संख्या में 40 प्रतिशत से अधिक नामांकन छात्राओं का होना इसे महिला शिक्षा के प्रमुख केन्द्र के रूप में भी स्थापित कर रहा है।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना से जुडी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी रोचक रही है। स्वतंत्रता पूर्व जयपुर रियासत के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल व उनके उत्तराधिकारी वी.टी. कृष्णमाचार्य द्वारा किए गए गंभीर प्रयासों व लम्बे विचार विमर्श के बाद 08 जनवरी 1947 को राजपूताना विश्वविद्यालय जिसे बाद मे वर्ष 1956 में राजस्थान विश्वविद्यालय का नाम दिया गया, की स्थापना की गई। धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा जैसे आदर्श वाक्य के साथ स्थापित इस विश्वविद्यालय के लिए जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई मानसिंह द्वारा सर्वप्रथम मोती डूंगरी किले से लगती 300 एकड भूमि उदारता के साथ प्रदान की गयी। इसी दौरान इसका अस्थायी कार्यालय जयपुर के केसरगढ किले में स्थापित किया गया। विश्वविद्यालय का संस्थापक कुलपति कौन हो, इसके बारे में संस्थापक रियासतों जयपुर, बीकानेर, उदयपुर, अलवर व जोधपुर के प्रतिनिधियों ने देश भर के विद्वानो के नामो पर गहन विचार विमर्श किया और अंतिम निर्णय के रूप में देश के महान गणितज्ञ पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जी.एस. महाजनी को इस दायित्व के लिए जयपुर के महाराजा द्वारा व्यक्तिगत रूप से आग्रह किया गया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इस विश्वविद्यालय से जुडे शिक्षाविदों के तपस्वी, समर्पित एवं शोधपूर्ण आचरण ने इस

विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ख्यातिपूर्ण पहचान दिलाई, यहां तक कि जे.एन.यू नई दिल्ली की स्थापना में इस विश्वविद्यालय के शिक्षकों की अहम भूमिका रही। इस विश्वविद्यालय से जुडे शिक्षाविदों को समाज के प्रत्येक वर्ग का विशिष्ट सम्मान मिला, इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि वर्ष 1961 में कुछ विश्वविद्यालय शिक्षक जब तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया से मिलने जब मुख्यमंत्री निवास पहुंचे तो उन्होने इन शिक्षकों से चर्चा के बाद आदर से उन्हे और कोई सेवा भी बताने के लिए कहा, इसी दौरान मिलने आए शिक्षकों में से एक शिक्षक ने विश्वविद्यालय के भविष्य में विस्तार को दृष्टिगत रखते हुऐ उनसे विश्वविद्यालय के लिए कुछ भूमि आवंटित करने की बात रख दी, मुख्यमंत्री सुखाडिया ने तुरंत अधिकारियों को बुलाया और बुलाकर विश्वविद्यालय विस्तार के लिए झालाना डूंगरी से लगती 157 एकड भूमि आवंटित करने के निर्देश प्रदान कर दिए, व इस चर्चा के कुछ समय बाद विश्वविद्यालय को औपचारिक रूप से 157 एकड भूमि का आवंटन पत्र जारी कर दिया गया, हालांकि यह भी एक तथ्य है कि सालों बाद यह विश्वविद्यालय को आवंटित भूमि राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नही हो सकी व इसके बडे भूभाग पर निजी व अन्य संस्थानो ने अपने अनाधिकृत कब्जे करना प्रारंभ कर दिया एक लम्बे समय बाद इस विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. भूपेन्द्र सिंह शेखावत ने विश्वविद्यालय की भूमि पर तेजी से हो रहे इन अतिक्रमणों की जानकारी विश्वविद्यालय प्रशासन के समक्ष रखी व इन अतिक्रमणों के विरूद्ध एक विशेष अभियान वर्ष 2005 मे मीडिया एवं अन्य संगठनो के सहयोग से चलाया इस अभियान के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय को इसकी स्थापना के 70 साल बाद मुख्य परिसर की 207 एकड भूमि का स्वामित्व मिला शेष 157 एकड भूमि को विश्वविद्यालय के स्वामित्व मे लिए जाने की प्रक्रिया अभी भी जारी है, जिसके तहत हाल ही विश्वविद्यालय को 500 बीघा भूमि का स्वामित्व मिला है।

तत्कालीन जयपुर रियासत से भूमि प्रदान करने के उपरान्त तत्कालीन कुलपति प्रो. मोहनसिंह मेहता जैसे शिक्षाविद् ने न केवल इस विश्वविद्यालय के आकर्षक स्वरूप को ही मूर्त रूप दिया वरन् देश के जाने पहचाने शिक्षाविदों को इस विश्वविद्यालय से जोडने की एक लगातार मुहिम चलाई, इसी मुहिम का परिणाम समझा जा सकता है कि इस विश्वविद्यालय से प्रो. सी. रंगनाथन, प्रो. राजा चलैया, प्रो. योगेन्द्र सिंह, जे.एस. भल्ला, बी.एल. सर्राफ, प्रो. दयाकृष्णा, प्रो. पी.एन श्रीवास्तव, सी.पी. भांभरी, प्रो. एस. लोकनाथन, प्रो. सतीश चन्द्रा, प्रो. बी.आर. मेहता जैसे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों का सान्निध्य मिला। यहां के छात्रों ने भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान कायम किया। प्रशासनिक क्षेत्र में आदर्श किशोर सक्सैना, अरविंद मायाराम, एन.एस. सिसोदिया, एम.एल. मेहता, व अरविंद पनगडिया जैसे नामों के साथ राजनीति में देश के उपराष्ट्रपति रहे भैंरोंसिंह शेखावत, नवल किशोर शर्मा, जैसे अनेको राजनीतिज्ञ इस विश्वविद्यालय की उपज रहे। आज भी राज्य के अधिकांश राजनीतिक दलों से जुडे वरिष्ठ नेता इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं।

जिस समय इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई उसके पीछे कितना पवित्र उद्देश्य उस समय के संस्थापकों का था, उसे इस रूप में समझा जा सकता है कि इस विश्वविद्यालय के स्थापना से जुडे राजपूताना की सहभागी रियासतों ने इस विश्वविद्यालय के लिए 02 लाख 50 हजार का पहला अनुदान तो दिया लेकिन इस अनुदान के साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि इस अनुदान को किसी रूप में भी इस विश्वविद्यालय की स्वायत्ता में दखल करने का तात्पर्य नही समझा जाएगा। विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षकों एवं निर्भिक व साधुत्व व्यक्तित्व के तत्कालीन कुलपतियों के तेज एवं व्यापक प्रभाव के चलते स्थापना के बाद एक लम्बे समय तक राज्य सरकारों ने भी इसकी स्वायत्ता में दखल का विचार भी नही रखा ।

यह देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जिसने अपने छात्रों को बढती दुर्घटनाओं में घायल होने व मृत्यू होने की स्थिति में छात्र दुर्घटना सहायता जैसा देश मे पहली बार अभिनव कार्यक्रम प्रारम्भ किया जिसके तहत अब तक 01 करोड रूपए से अधिक की राशि पीडित छात्रों एवं उनके परिजनो को सहायता के रूप में दी जा चुकी है। वर्तमान मे विश्वविद्यालय अपने किसी भी छात्र की दुर्घटना मे मृत्यू होने पर विश्वविद्यालय जनसम्पर्क कार्यालय द्वारा तैयार की गई इस अभिनव व महत्वपूर्ण योजना के तहत उसके परिजनो को वर्तमान शैक्षणिक सत्र में 12 लाख रू. व घायल होने की स्थिति मे 01 लाख रू. की चिकित्सा सहायता प्रदान किए जाने का प्रावधान इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित किया गया है। जिसे शीघ्र ही औपचारिक रूप प्रदान किया जा रहा है।

समाजिक सरोकारों में अपनी अहम भूमिका निभाने में भी यह विश्वविद्यालय सदैव तत्पर रहा है, जयपुर में वर्ष 2008 में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों की आतंकी कार्यवाही में मृत एवं घायल हुए निर्दोष जयपुर वासियों के आश्रितों को विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों में प्राथमिकता के साथ निशुल्क रूप से उनके अध्ययन समाप्ति तक उच्च शिक्षा प्रदान करने जैसी एक अभिनव पहल भी इस विश्वविद्यालय द्वारा की गई, इस योजना के तहत इस आतंकी घटना से जुडे लगभग 40 युवाओं को इस विश्वविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान की जा रही है।

(डॉ. भूपेन्द्र सिंह शेखावत)
राजस्थान विश्वविद्यालय
फोन न. 9413343291